अथवा

सकल राष्ट्रीय प्रयोज्य आय	=	बाजार कीमत पर सकल राष्ट्रीय उत्पाद
	+	विदेशों से निबल चालू हस्तांतरण
निबल राष्ट्रीय प्रयोज्य आय	=	सकल राष्ट्रीय प्रयोज्य आय
	–	मूल्य ह्रास

निजी क्षेत्र की प्रयोज्य आय संबंधी समुच्चय

राष्ट्रीय आय सम्बन्धी समुच्चयों से वैयक्तिक प्रयोज्य आय निकालने के लिए निम्नलिखित समायोजन करने होते हैं।

सबसे पहले हम निजी क्षेत्र को देशीय उत्पाद से अर्जित आय का आंकलन करते हैं :

निजी क्षेत्र को देशीय उत्पाद से अर्जित आय	=	साधन लागत पर निबल देशीय उत्पाद
	–	सरकार को सम्पत्ति व उद्यमवृति से प्राप्त आय
	–	गैर–विभागीय उद्यमों की बचत

निजी क्षेत्र को देशीय उत्पाद से अर्जित आय से निजी आय का आंकलन किया जाता है।

निजी आय	=	निजी क्षेत्र को देशीय उत्पाद से अर्जित आय
	+	राष्ट्रीय ऋण पर ब्याज
	+	विदेशों से निबल कारक आय
	+	सरकार से चालू हस्तांतरण
	+	शेष विश्व से निबल चालू हस्तांतरण

निजी आय से वैयक्तिक आय निकाली जाती है :

वैयक्तिक आय	=	निजी आय
	–	निजी उद्यमों की बचतें (विदेशी कम्पनियों की निबल प्रतिधारित आय को निकालकर)
	–	निगम कर

वैयक्तिक आय से वैयक्तिक प्रयोज्य आय निकाली जाती है :

वैयक्तिक प्रयोज्य आय	=	वैयक्तिक आय
	–	परिवारों द्वारा दिये गए प्रत्यक्ष कर
	–	सरकारी प्रशासनिक विभागों को विविध प्राप्तियाँ

ऊपर दिखाए गए समायोजनों में कुछ मदों के बारे में अधिक जानकारी आवश्यक है। **'राष्ट्रीय ऋण पर ब्याज'** उस ऋण पर दिया गया ब्याज है जो सरकार ने अपने प्रशासनिक व्यय को पूरा करने के लिए लिया था। यह प्राप्तकर्त्ताओं की कारक आय नहीं है इसलिए इसे देशीय उत्पाद में शामिल नहीं किया गया था लेकिन यह प्रयोज्य आय का एक भाग तो है इसलिए इसे जोड़ा गया।

सरकारी प्रशासनिक विभागों को विविध प्राप्तियों में व्यक्तियों द्वारा दी गई फीस, जुर्माना, सफाई कर आदि शामिल किए जाते हैं।

इकाई-7

आय और रोजगार का निर्धारण

अनैच्छिक बेरोजगारी : जन प्रचलित मजदूरी दर पर कार्य करने योग्य और इच्छुक सभी व्यक्तियों को काम नहीं मिलता तो यह अनैच्छिक बेरोजगारी की स्थिति है।

समग्र माँग : अर्थव्यवस्था में अन्तिम वस्तुओं की कुल माँग को समग्र माँग कहते हैं। यही अर्थव्यवस्था में अन्तिम वस्तुओं पर समग्र व्यय भी है।

समग्र माँग के घटक

1. निजी उपभोग के लिए वस्तुओं और सेवाओं की माँग। इसे निजी अन्तिम उपभोग व्यय भी कहते हैं।
2. निजी निवेश के लिए माँग।
3. सरकार द्वारा वस्तुओं व सेवाओं की माँग।
4. निबल निर्यात।

हमें आय व रोजगार के निर्धारण का अध्ययन केवल दो क्षेत्रकों के माडल के संदर्भ में करना है। अतः समग्र माँग के तीसरे व चौथे घटक पर विचार नहीं करेंगे। हमनें दो क्षेत्रक, परिवार व फर्म लिए हैं।

1. निजी उपभोग : निजी उपभोग के लिए वस्तुओं और सेवाओं की माँग परिवारों द्वारा की जाती है। इसे निजी अन्तिम **उपभोग व्यय** भी कहते हैं, इसे हम उपभोग व्यय कहेंगे। यहाँ उपभोग व्यय से तात्पर्य प्रत्याशित उपभोग व्यय है।

यह माँग बहुत सी बातों से प्रभावित होती है जैसे कि वस्तुओं और सेवाओं की कीमतें, आय, सम्पत्ति, संभावित आय और व्यक्तियों की रूचि व प्राथमिकताएँ आदि। केंस (Keynes)ने उपभोग के एक मौलिक मनोवैज्ञानिक नियम की रचना कर उपभोग क्रियाओं को एक व्यवहारिक नियम का रूप देने का कार्य किया।

केंस के अनुसार जैसे-जैसे आय बढ़ती है उपभोग व्यय भी बढ़ा दिया जाता है। पर उपभोग व्यय की यह वृद्धि आय में वृद्धि से कम होती है। उपभोग व आय के इस सम्बन्ध को **उपभोग फलन** कहते हैं। उपभोग फलन को हम निम्नलिखित समीकरण के रूप में व्यक्त कर सकते हैं :

$$c = \bar{C} + bY \; ; \; \bar{C} > o, \; o < b < 1$$

c = उपभोग

$\bar{C}$ = स्वायत उपभोग (शून्य आय पर उपभोग व्यय)

b = सीमान्त उपभोग प्रवृति

Y = आय का स्तर

$\bar{C}$ को घनात्मक माना गया है, यानि आय के शून्य स्तर पर भी उपभोग व्यय है। अतः किसी भी स्थिति में उपभोग व्यय शून्य नहीं हो सकता। 'b' उपभोग व्यय में परिवर्तन और आय में परिवर्तन का अनुपात है, अर्थात् आय में प्रति इकाई परिवर्त्तन से उपभोग व्यय में परिवर्त्तन की दर। इसे **सीमान्त उपभोग प्रवृति**(सी.उ.प्र.) कहते हैं। उदाहरण के लिये यदि $b = 0.6$ तो आय में 1 रु. वृद्धि होने पर उपभोग व्यय में 60 पैसे वृद्धि होगी। यदि $b = 0.45$ तो आय में 1 रु. वृद्धि होने से उपभोग व्यय में 45 पैसे की वृद्धि होगी।

b यानि सीमान्त उपभोग प्रवृति को घनात्मक माना गया है और इसका मूल्य 0 और 1 के बीच है। इसका अर्थ है कि आय में 1 रु. की वृद्धि से उपभोग व्यय में वृद्धि 1 रु. से कम होगी। यदि b = 0.9 तो आय में 1 रु. वृद्धि से उपभोग व्यय में 90 पैसे की वृद्धि होगी। सीमान्त उपभोग प्रवृति को स्थिर माना गया है अब हम एक संख्यात्मक उदाहरण लेते हैं।

मान लीजिए उपभोग फलन C = 100 + 0.8Y है।

आय के अलग-अलग स्तर पर सीमान्त उपभोग प्रवृति कितनी होगी और कुल उपभोग व्यय कितना होगा यह तालिका 1 में दर्शाया गया है।

तालिका-1 उपभोग, आय व सीमान्त उपभोग प्रवृति

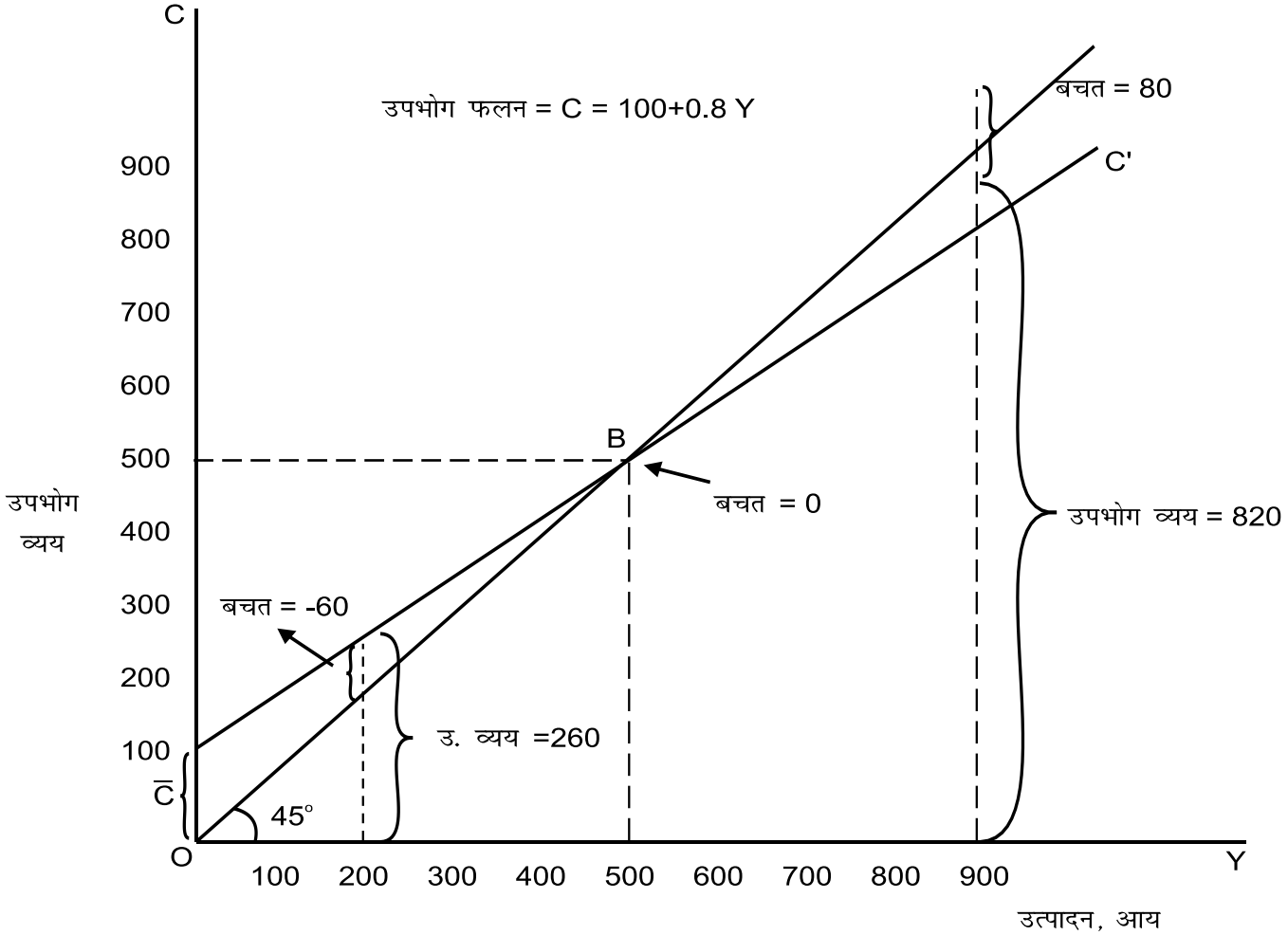

इस तालिका में आय के अलग-अलग स्तर पर उपभोग व्यय दर्शाया गया है और उपभोग व्यय ऊपर दिए गए उपभोग फलन के आधार पर निकाला गया है। जैसे कि जब आय शून्य है तो C = 100 + 0.8 x 0 = 100

जब आय 500 है तो C = 100 + 0.8 x 500 = 100 + 400 = 500

कालम (1) आय के विभिन्न स्तर पर उपभोग व्यय दर्शाता है। कालम (2) उपभोग के विभिन्न स्तर दर्शाता है। कालम (3) आय में परिवर्तन दर्शाता है। कालम (4) उपभोग में परिवर्तन दर्शाता है। कालम (5) सीमान्त उपभोग प्रवृत्ति का मूल्य दर्शाता है। दिए गए उपभोग फलन में सीमान्त उपभोग प्रवृति 0.8 है और यह स्थिर है। अत: कालम (5) में सीमान्त उपभोग प्रवृति आय के प्रत्येक स्तर पर 0.8 है।

इस उपभोग फलन को रेखाचित्र पर भी दिखा सकते हैं। रेखाचित्र 1 में इसे दर्शाया गया है।

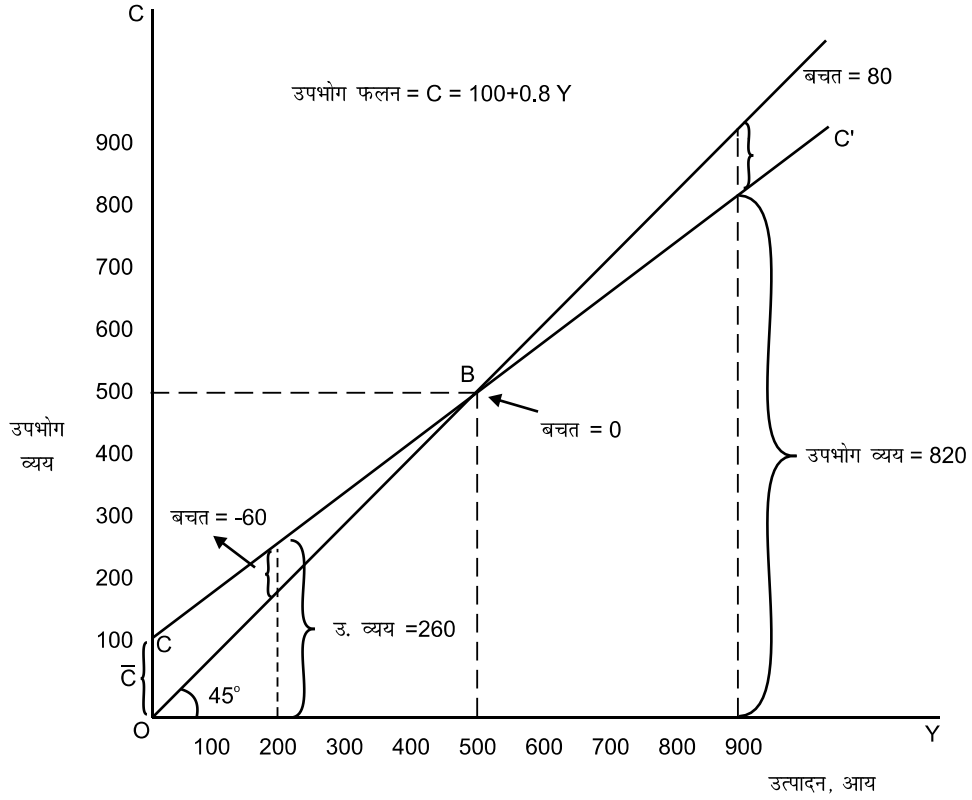

रेखाचित्र 1 – उपभोग वक्र

इस रेखाचित्र को समझने के लिये पहले हम इसमें उदगम बिन्दु से खींची गई 45^0 की रेखा पर विचार करेंगे। OX और OY अक्ष पर माप का पैमाना समान है। 45^0 रेखा की यह विशेषता है कि इस पर कोई भी बिन्दु OX अक्ष व OY अक्ष से समान दूरी पर है। OX अक्ष से दूरी उपभोग व्यय मापती है और OY अक्ष से दूरी आय मापती है।

इस प्रकार 45^0 रेखा के किसी भी बिन्दु पर आय व उपभोग व्यय बराबर हैं। हमारे उदाहरण में लिए गए उपभोग फलन के आधार पर खींची गई उपभोग वक्र एक सीधी रेखा CC' है जिसका ढलान(Slope) 0.8 है। यह उपभोग वक्र 45^0 रेखा को B बिन्दु पर काटती है। यह बिन्दु दर्शाता है कि आय के स्तर 500 पर उपभोग व्यय 500 है। 45^0 रेखा से ऊपर कोई भी बिन्दु दर्शाएगा कि उपभोग व्यय आय से अधिक है और इसके नीचे कोई भी बिन्दु दर्शाएगा कि उपभोग व्यय आय से कम है। OY अक्ष पर C बिन्दु दर्शाता है कि आय शून्य होने पर उपभोग व्यय 100 है।

उपभोग वक्र के B बिन्दु से बाँई ओर के भाग पर कोई भी बिन्दु यह दर्शाता है कि उपभोग व्यय आय से अधिक है और इसके B बिन्दु से दाँयी ओर के हिस्से पर कोई बिन्दु दर्शाता है कि उपभोग व्यय आय से कम है। उदाहरण के लिये जब आय 200 है तो उपभोग व्यय 260 है और जब आय 900 है तो उपभोग व्यय 820 है।

अत: जब उपभोग वक्र 45^0 रेखा से ऊपर होती है तो यह दर्शाती है कि उपभोग व्यय आय से अधिक है यानि अर्थव्यवस्था में बचत ऋणात्मक हैं जहाँ उपभोग वक्र 45^0 रेखा को काटती है वह बिन्दु दर्शाता है कि आय और उपभोग व्यय बराबर हैं और बचत शून्य है। जब उपभोग वक्र 45^0 रेखा से नीचे होती है तो उपभोग व्यय आय से कम होता है और बचत घनात्मक होती है। उपभोग वक्र और 45^0 रेखा के ऊर्ध्व (vertical) अन्तर द्वारा बचत मापी जा सकती है।

उपभोग और बचत

अब हम उपभोग व बचत के सम्बन्ध पर विचार करेंगे। यह सम्बंध इस प्रकार है :

$$S = Y - C$$

यह समीकरण दर्शाता है कि आय का वह भाग जिसे उपभोग पर खर्च नहीं किया वह बचत है। इसी समीकरण व उपभोग फलन के आधार पर हम बचत फलन ज्ञात कर सकते हैं। बचत फलन यह दर्शाता है कि आय के विभिन्न स्तरों पर बचत के स्तर क्या हैं।

$$\begin{aligned} S &= Y - C \\ &= Y - (\bar{C} + bY) \qquad \left\{ \because C = \bar{C} + by \right. \\ &= Y - \bar{C} - bY \qquad \left. \text{जहाँ } \bar{C} = \text{शून्य आय पर उपभोग} \right\} \\ &= -\bar{C} + Y - bY \\ S &= -\bar{C} + (1 - b)\, Y \end{aligned}$$

यही बचत फलन है। यदि आय शून्य है तो बचत $\bar{C}$ होगी यानि ऋणात्मक होगी और $\bar{C}$ के बराबर होगी। यह ऋणात्मक बचत शून्य आय स्तर पर उपभोग व्यय ($\bar{C}$) के बराबर है।

(1-b) बचत वक्र का ढलान (Slope) है जो यह दर्शाता है कि आय के बढ़ने पर उसका कितना भाग बचाया जाता है। इसे **सीमांत बचत प्रवृति** कहते हैं। क्योंकि b का मूल्य एक से कम माना गया है इसलिये (1-b) का मूल्य घनात्मक है अर्थात् सीमान्त बचत प्रवृति घनात्मक है। यदि सीमान्त उपभोग प्रवृति 0.8 है तो सीमान्त बचत प्रवृति $(1-0.8) = 0.2$ होगी। यानि यदि आय 1 रु. बढ़े तो बचत 20 पैसे बढ़ेगी।

अत: हम कह सकते हैं कि सीमांत उपभोग प्रवृति + सीमांत उपभोग प्रवृति = 1

उपभोग फलन के संदर्भ में लिए गए सांख्यिक उदाहरण के आधार पर हम बचत फलन ज्ञात करते हैं –

$$\begin{aligned} S &= \bar{C} + (1 - b)\, Y \\ &= -100 + (1 - 0.8)\, Y \\ S &= -100 + 0.2\, Y \end{aligned}$$

तालिका 2 : उपभोग - बचत सम्बन्ध

आय Y	आय मे परिवर्तन ΔY	उपभोग C	उपभोग में परिवर्तन ΔC	(सी. उ. प्र.) ΔC/ΔY	बचत S	बचत में परिवर्तन ΔS	(सी. ब. प्र.) ΔS/ΔY	C+S	MPC+ MPS
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)	(8)	(9)	(10)
0	-	100	-	-	-100	-	-	0	-
100	100	180	80	0.8	-80	20	0.2	100	1
200	100	260	80	0.8	-60	20	0.2	200	1
300	100	340	80	0.8	-40	20	0.2	300	1
400	100	420	80	0.8	-20	20	0.2	400	1
500	100	500	80	0.8	0	20	0.2	500	1
600	100	580	80	0.8	20	20	0.2	600	1
700	100	660	80	0.8	40	20	0.2	700	1
800	100	740	80	0.8	60	20	0.2	800	1
900	100	820	80	0.8	80	20	0.2	900	1
1000	100	900	80	0.8	100	20	0.2	1000	1

तालिका 2 में आय के विभिन्न स्तर पर उपभोग व्यय और बचत दर्शायी गई है। ध्यान दें कि उपभोग व्यय और बचत का योग सदा आय के बराबर होता है जैसा कि तालिका के कालम (9) में दर्शाया गया है। और सी. उ.प्र. व सी.ब.प्र. का योग सदा 1 के बराबर होता है जैसा कि कालम 10 में दिखाया गया है।

कालम 1 से 5 वही हैं जो तालिका 1 में थे कालम 6 में आय के विभिन्न स्तर पर होने वाली बचत दिखाई गई है जिसे बचत फलन से ज्ञात किया गया है। कालम 8 सी.ब.प्र. निकालने की विधि दर्शाता है। जब आय 600 से बढ़कर 700 होती है तो बचत 20 से बढ़कर 40 हो जाती है। अतः सी.ब.प्र. = 20/100 = 0.2

तालिका 2 में दी गई सूचना को रेखाचित्र पर दिखाया जा सकता है जैसा कि रेखाचित्र 2 में दिखाया गया है।

रेखाचित्र 2 का भाग (क) उपभोग वक्र दर्शाता है जो उपभोग फलन के आधार पर खींची गई है। भाग (ख) बचत वक्र दर्शाता है। भाग (क) में 45^0 रेखा और उपभोग रेखा के बीच का ऊर्ध्व (vertical) अन्तर बचत है। इन्हीं अन्तरों को दर्शाते हुए भाग (ख) की बचत वक्र खींची गई है।

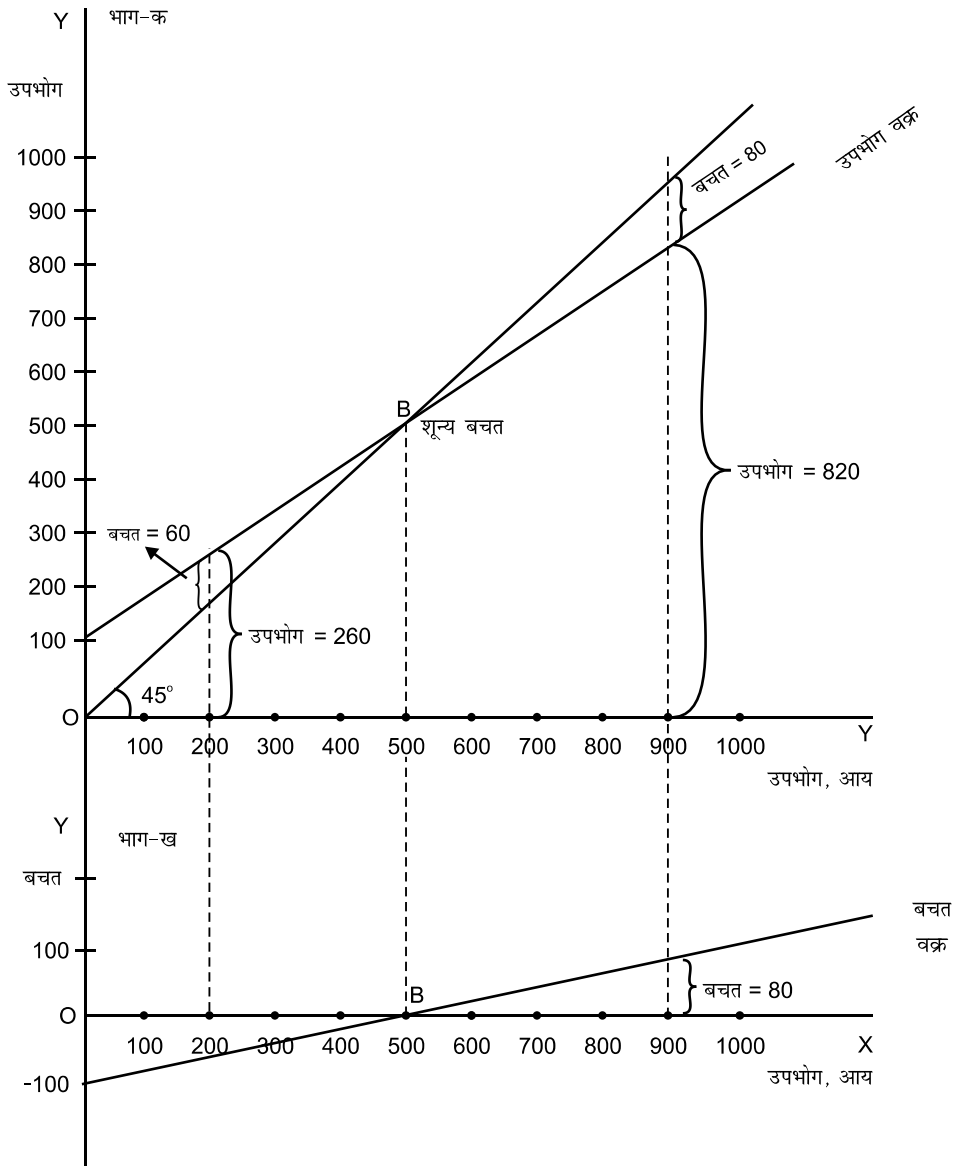

रेखाचित्र 2

जब आय 500 है तो भाग (क) में उपभोग वक्र दर्शाती है कि उपभोग व्यय भी 500 रुपये है। अत: बचत शून्य है। भाग (ख) में शून्य बचत B बिन्दु दर्शाता है जहाँ बचत वक्र क्षैतिज अक्ष को काटती है। आय 200 होने पर उपभोग व्यय 260 है और बचत -60 है। आय 900 होने पर उपभोग व्यय 820 है और बचत 80 है।

अत: रेखाचित्र के भाग क में B बिन्दु की बाँयी ओर उपभोग वक्र 45^0 रेखा के ऊपर है जो यह दर्शाता है कि यहाँ उपभोग व्यय आय से अधिक है और बचत ऋणात्मक है। भाग ख में बचत वक्र B बिन्दु से बाँयी ओर क्षैतिज अक्ष के नीचे है।

भाग क में B बिन्दु के दाँयी ओर उपभोग वक्र 45^0 रेखा के नीचे है जो दर्शाता है कि उपभोग व्यय आय से कम है। इसलिये भाग ख में B से दाहिनी ओर बचत वक्र क्षैतिज अक्ष से ऊपर है जो घनात्मक बचत दर्शाती है।

औसत उपभोग प्रवृति और औसत बचत प्रवृति

उपभोग फलन से हम आय के अलग-अलग स्तर पर उपभोग व्यय ज्ञात कर सकते हैं। उपभोग व्यय और आय का अनुपात (C/Y) औसत उपभोग प्रवृति कहलाता है।

इसी प्रकार बचत फलन से आय के अलग-अलग स्तर पर बचत ज्ञात की जा सकती है। बचत और आय के अनुपात (C/S) को औसत बचत प्रवृति कहते हैं औसत उपभोग प्रवृति और औसत बचत प्रवृति का योग सदा 1 के बराबर होता है। इसका प्रमाण नीचे दिया गया है।

$$Y = C + S$$

दोनों ओर को Y से भाग करते हैं

$$\frac{Y}{Y} = \frac{C}{Y} +$$

1 = औसत उपभोग प्रवृति + औसत बचत प्रवृति

पहले दिए गए उदाहरण के आधार पर नीचे दी गई तालिका 3 बनाई गई है जिसमें आय के विभिन्न स्तरों पर औसत उपभोग प्रवृति और औसत बचत प्रवृति के मूल्य दर्शाए गए हैं।

तालिका 3 : औसत उपभोग और बचत प्रवृतियाँ

आय Y	उपभोग व्यय C	औ.उ.प्र. (APC) (2)/(1)	बचत S	औ.ब.प्र. (APS) (4)/(1)	औ.उ.प्र.+औ.ब.प्र. (3) + (5)
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)
0	100	-	$\frac{S}{Y}$ -100	-	-
100	180	1.8	-80	-0.8	1
200	260	1.3	-60	-0.3	1
300	340	1.13	-40	-0.13	1
400	420	1.05	-20	-0.05	1
500	500	1	0	0	1
600	580	0.97	20	0.03	1
700	660	0.94	40	0.06	1
800	740	0.92	60	0.08	1
900	820	0.91	80	0.09	1
1000	900	0.90	100	0.10	1

नोट : तालिका में सभी आंकड़ों को 2 दशमलव बिंदुओं तक ही आकलित किया गया है।

कालम (3) औसत उपभोग प्रवृति निकालने की विधि दर्शाता है और कालम (5) औसत बचत प्रवृति निकालने की विधि दर्शाता है। कालम (6) दर्शाता है कि औ.उ.प्र. और औ.ब.प्र. का योग सदा 1 होता है।

इस तालिका का कालम (3) यह दर्शाता है कि जैसे-जैसे आय बढ़ती है औसत उपभोग प्रवृति घटती जाती है और कालम (5) दर्शाता है कि औसत बचत प्रवृति बढ़ती जाती है।

2. निजी निवेश

निजी निवेश की माँग का अर्थ है फर्मों के द्वारा प्रत्याशित निवेश व्यय। इसमें भौतिक पूंजी में वृद्धि और स्टॉक में वृद्धि शामिल होते हैं। इस अध्ययन में हम यह परिकल्पना करते हैं कि निवेश व्यय स्वायत्त है। इसका अर्थ कि निवेश संबंधी निर्णय उत्पादन सहित इसके किसी भी निर्धारक तत्त्व से प्रभावित नहीं होते।

समग्र पूर्ति

एक देश की आर्थिक सीमा में वस्तुओं व सेवाओं का कुल उत्पादन समग्र पूर्ति कहलाता है। इसका तात्पर्य अर्थव्यवस्था में प्रत्याशित समग्र उत्पादन से है। यह परिकल्पना की जाती है कि अल्पकाल में वस्तुओं की कीमतें नहीं बदलती और पूर्ति पूर्णतया लोचदार है। दिए हुए कीमत स्तर पर उत्पादन पूर्ण रोजगार की स्थिति तक बढ़ाया जा सकता है। अत: कुल उत्पादन कितना होगा यह मुख्यत: अर्थव्यवस्था में समग्र माँग पर निर्भर करता है।

अर्थव्यवस्था में पूर्ण रोजगार की स्थिति में पहुँचने तक उत्पादन, आय व रोजगार का स्तर एक साथ एक ही दिशा में परिवर्त्तित होते हैं। उत्पादन में वृद्धि का अर्थ है रोजगार के स्तर में वृद्धि और आय के स्तर में वृद्धि। उत्पादन में कमी से रोजगार व आय का स्तर भी कम हो जाता है।

उत्पादन, आय व रोजगार के संतुलन स्तर का निर्धारण

हम अपने अध्ययन में केवल दो क्षेत्रक, परिवार और फर्म ही शामिल करेंगे। अत: इस अध्ययन में समग्र माँग के केवल दो घटक हैं : उपभोग माँग और निवेश माँग। संतुलन स्तर के निर्धारण की दो विधियाँ हैं :

(1) उपभोग जमा निवेश विधि [(C+I) approach]

उत्पादन के स्तर के निर्धारण की एक विधि उपभोग जमा निवेश विधि है।

रेखाचित्र 3 में उत्पादन या आय के विभिन्न स्तरों पर कुल व्यय अर्थात् समग्र माँग दर्शायी गई है।

CC वक्र उपभोग वक्र है जो आय के प्रत्येक स्तर पर प्रत्याशित उपभोग व्यय दर्शाती है। इसमें हम स्वायत्त निवेश जोड़ देते हैं। इससे हमें C+I वक्र प्राप्त हो जाती है। अब हम 45^0 रेखा की सहायता से उत्पादन व आय का संतुलन स्तर निर्धारित कर सकते हैं। 45^0 रेखा पर प्रत्येक बिन्दु की OX अक्ष से दूरी OY अक्ष से दूरी के बराबर होती है जिसका अर्थ कि इस वक्र पर प्रत्येक बिन्दु उत्पादन व आय का वह स्तर दर्शाता है जो समग्र माँग के बराबर है। अर्थव्यवस्था संतुलन की स्थिति में तभी होती है जब समग्र माँग और समग्र पूर्ति बराबर हों।

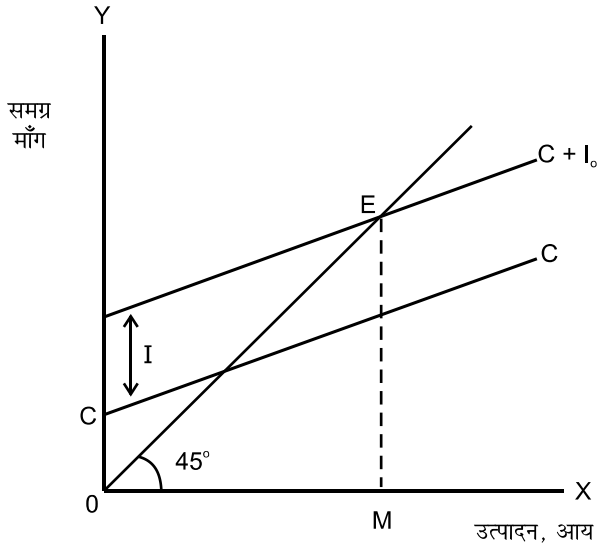

रेखाचित्र 3 उपभोग जमा निवेश विधि से उत्पादन का निर्धारण

$(C + I_o)$ वक्र विभिन्न उत्पादन स्तरों पर परिवारों और फर्मों के प्रत्याशित व्यय को दर्शाता है। अर्थव्यवस्था का संतुलन बिन्दु E होगा जहाँ $(C+I_o)$ वक्र 45^0 रेखा को काटती है। E बिन्दू OM उत्पादन के स्तर को दर्शाता है और EM समग्र माँग को दर्शाता है। OM और EM बराबर हैं। अत: OM उत्पादन स्तर संतुलन स्तर है क्योंकि इस पर समग्र माँग $(C+I_o)$ समग्र पूर्ति के बराबर है।

समायोजना की प्रक्रिया

संतुलन की स्थिति में प्रत्याशित व्यय और प्रत्याशित उत्पादन बराबर होते हैं। जब ये दोनों बराबर नहीं होते तो उत्पादन में परिवर्तन होता है और अन्त में ये दोनों बराबर हो जाते हैं।

इस प्रक्रिया को समझने के लिए हम एक ऐसी स्थिति लेते है जिसमें उत्पादन स्तर रेखाचित्र 3 के संतुलन उत्पादन स्तर OM से अधिक है। ये स्तर 45^0 रेखा पर E बिन्दु के दाँयी ओर होगा और इस स्तर पर $(C+I_o)$ रेखा 45^0 रेखा के नीचे होगी। अत: प्रत्याशित व्यय प्रत्याशित उत्पादन से कम होगा। इसका अर्थ है कि फर्म जितना उतपादन कर रही हैं, उपभोक्ता और फर्म दोनों मिलकर उससे कम माल खरीदेंगे। परिणामस्वरूप स्टॉक में अप्रत्याशित वृद्धि हो जाएगी। बिना बिके माल के स्टॉक में इस अप्रत्याशित वृद्धि के परिणामस्वरूप फर्में उत्पादन व रोजगार का स्तर कम कर देंगी। उत्पादन घटाने की यह प्रक्रिया तब तक चलेगी जब तक की उत्पादन घटकर OM स्तर तक नहीं आ जाता। OM स्तर पर समग्र माँग और समग्र पूर्ति बराबर हैं। अत: फिर से संतुलन की स्थिति पर पहुँच जाते हैं।

अब हम ऐसी स्थिति लेते हैं जिसमें उत्पादन का स्तर संतुलन स्तर OM से कम है। उत्पादन के ऐसे स्तर पर $(C+I_o)$ वक्र 45^0 रेखा के ऊपर होगी। इसका अर्थ की प्रत्याशित व्यय प्रत्याशित उत्पादन से अधिक होगा। समग्र माँग कुल उत्पादन से अधिक है। इसके फलस्वरूप स्टॉक में अप्रयोजित कमी आने लगेगी। इसके परिणामस्वरूप फर्में रोजगार और उत्पादन के स्तर को बढ़ाऐंगी। उत्पादन बढ़ाने की यह प्रक्रिया तब तक चलेगी जब तक की उत्पादन बढ़कर OM स्तर पर नहीं पहुँच जाता। OM स्तर पर समग्र माँग और समग्र पूर्ति बराबर हैं। अब कोई परिवर्त्तन नहीं होगा।